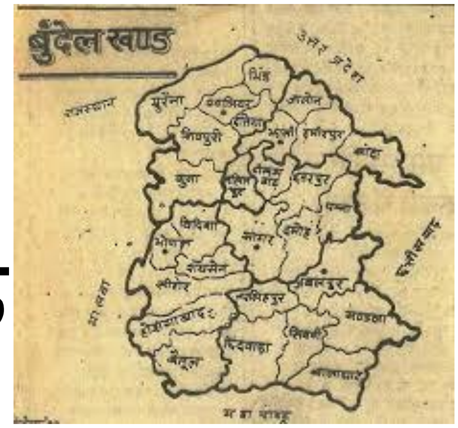
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





बान्दा के मोहल्ले व नामकरण

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अध्याय शीर्षक	बान्दा के मोहल्ले
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Mohalle of Banda**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – मोहल्ले व नामकरण का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

नगर पालिका परिषद बान्दा मोहल्ले व नामकरण

1	मौहल्ला	अशोक लाट		अ	v
2	मौहल्ला	अवस्थी धर्मशाला		आ	vk
3	मौहल्ला	अहीरन मोहाल, मर्दन नाका के पास			
4	मौहल्ला	अलीगन्ज			
5	मौहल्ला	अर्दली बाजार			
6	मौहल्ला	अली, सफीक, आरिफ इमामबाड़ा			
7	मौहल्ला	आम बाग			
8	मौहल्ला	इमामबाड़ा		इ	b
9	मौहल्ला	रामा का इमामबाड़ा			
10	मौहल्ला	————		ई	bZ
11	मौहल्ला	————		उ	m
12	मौहल्ला	ऊन्ट मोहाल		ऊ	Å
13	मौहल्ला	एश गन्ज		ए, ऐ	,] ,S
14	मौहल्ला	————		ओ,औ,अं	vks vkS va
15	मौहल्ला	क्योटरा		क	d
16	मौहल्ला	कटरा			
17	मौहल्ला	कचहरी			
18	मौहल्ला	कर्बला			
19	मौहल्ला	कहली नाला			
20	मौहल्ला	कलामत नाला			
21	मौहल्ला	कपरिया मोहाल			
22	मौहल्ला	कन्चन पुरवा			
23	मौहल्ला	कालवनगन्ज			
24	मौहल्ला	काछी मोहाल			
25	मौहल्ला	किलेदार पुरवा, शुकुल कुआ से बबेरु रोड पर 500 मीटर पर			
26	मौहल्ला	कैलाशपुरी			
27	मौहल्ला	————			
28	मौहल्ला	खाई पार		ख	[k
29	मौहल्ला	खाई पार आइटीआइ के पास			
30	मौहल्ला	खाई पार आशिक			
31	मौहल्ला	खुटला (वर्तमान सिद्धेश्वर)			
32	मौहल्ला	खिन्नी नाका			
33	मौहल्ला	गूलर नाका		ग	x
34	मौहल्ला	गायत्री नगर गगगग			

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

35	मौहल्ला	गुलाब बाग		
36	मौहल्ला	गोसाई गन्ज		
37	मौहल्ला	————	घ	?k
38	मौहल्ला	चमरौडी	च	p
39	मौहल्ला	चमड़ा मण्डी		
40	मौहल्ला	चूना भट्टी, निम्नीपार के पास, शहर का दक्षिणी भाग		
41	मौहल्ला	चौसठ जोगिनी		
42	मौहल्ला	छावनी(बाकरगन्ज)	छ	N
43	मौहल्ला	छोटी बाजार		
44	मौहल्ला	छिपटहरी		
45	मौहल्ला	जरैली कोठी	ज	t
46	मौहल्ला	जन्गाल दफ्तर		
47	मौहल्ला	जामामस्जिद		
48	मौहल्ला	जिला अस्पताल पुराना		
49	मौहल्ला	झण्डा चौक	झ	>
50	मौहल्ला	झील का पुरवा		
51	मौहल्ला	————	ट	V
52	मौहल्ला	ठठराही	ठ	B
53	मौहल्ला	डिग्गी चौराहा	ड	M
54	मौहल्ला	डिलहा गन्ज, बाकरगन्ज के पास		
55	मौहल्ला	————	ढ	<
56	मौहल्ला	तुलसीदास का अहाता	त	r
57	मौहल्ला	तोशाखाना	त	r
58	मौहल्ला	————	थ	F
59	मौहल्ला	————	द	n
60	मौहल्ला	धान्ती इमामबाड़ा	ध	/
61	मौहल्ला	नजर बाग सब्जी मण्डी	न	u
62	मौहल्ला	नयागन्ज		
63	मौहल्ला	नवाब साहब की सराय		
64	मौहल्ला	नवाब का इमामबाड़ा		
65	मौहल्ला	नोनिया/नुनिया मुहाल खच्चरो का मुहल्ला		
66	मौहल्ला	निम्नि पार		
67	मौहल्ला	निम्नि पार मोहल्ला		
68	मौहल्ला	निजामी पैलेस		
69	मौहल्ला	पद्माकर चौराहा	प	i

70	मौहल्ला	पद्माकर			
71	मौहल्ला	पीली कोठी			
72	मौहल्ला	पुलिस कॉलोनी			
73	मौहल्ला	फूल चौराहा		फ	**Q**
74	मौहल्ला	बकरगन्ज (जी जी आइ सी के पास)		ब	**C**
75	मौहल्ला	बलखण्डी नाका			
76	मौहल्ला	बरन साहब का इमामबाड़ा			
77	मौहल्ला	बन्योटा			
78	मौहल्ला	बन्गाली टोला अम्बेडकर नगर			
79	मौहल्ला	बान्दा रेलवे स्टेशन			
80	मौहल्ला	बाकरगन्ज			
81	मौहल्ला	बारादरी			
82	मौहल्ला	बिजली खेड़ा			
83	मौहल्ला	बुधराम आश्रम			
84	मौहल्ला	भवानी पुरवा		भ	**H**
85	मौहल्ला	भाऊराम तय्या का इमामबाड़ा		भ	**H**
86	मौहल्ला	मनिहारी / मनोहरी गन्ज		म	**e**
87	मौहल्ला	महामाई मन्दिर(निम्निपार)			
88	मौहल्ला	मडिया/मढ़िया नाका /मधिया नाका(निम्नीपार)			
89	मौहल्ला	मनोहरी गन्ज			
90	मौहल्ला	मनोरी गन्ज			
91	मौहल्ला	मरदन नाका/मर्दन नाका वैश्या			
92	मौहल्ला	मेमसाहब की सराय (क्योटरा के दक्षिण में)			
93	मौहल्ला	मिस्टर मायने**(Mayne)**की सराय अर्दली बाजार के पास			
94	मौहल्ला	मोचियाना			
95	मौहल्ला	मोचियाना गली (कोतवाली के पास)			
96	मौहल्ला	मोतियारा			
97	मौहल्ला	मुचियाना			
98	मौहल्ला	————		य	**;**
99	मौहल्ला	रहुनिया		र	**j**
100	मौहल्ला	रामलीला(बाकरगन्ज)			
101	मौहल्ला	रामलीला मैदान(सेठों का बाड़ा) गुलाब बाग के पास			
102	मौहल्ला	रामा का इमामबाड़ा			
103	मौहल्ला	रेसकोर्स, शान्तिनगर रेसकोर्स पर बसा है			
104	मौहल्ला	लड़ाका/लरक्का पुरवा		ल	**y**

	मौहल्ला	लश्कर			
105	मौहल्ला	लाला भैया का अखाड़ा			
106	मौहल्ला	लुधौरा			
107	मौहल्ला	लोहार तलैया			
108	मौहल्ला	————		व	o
109	मौहल्ला	,शान्ति नगर गगगगग		,श	]'
110	मौहल्ला	सराय, वर्तमान सब्जी मण्डी ''हरिश्चन्द्र का हाता'' में है।		स	l
111	मौहल्ला	सदर दवाखाना			
112	मौहल्ला	सर्वोदय नगर???????			
113	मौहल्ला	सुतरखाना बन्गालीपुरा			
114	मौहल्ला	सुतरखाना(बढ़ई)			
115	मौहल्ला	सेक साहब की सराय			
116	मौहल्ला	सेठ का बाड़ा			
117	मौहल्ला	सिविल लाइन			
118	मौहल्ला	हरदौली		ह	g
119	मौहल्ला	हरिजन बस्ती			
120	मौहल्ला	हरिश्चन्द्र का हाता			
121	मौहल्ला	हठेटी पुरवा			
122	मौहल्ला	हनुमानगढ़ी(बाकरगन्ज)			
123	मौहल्ला	हाथी खाना(अलीगन्ज उत्तर)			
124	मौहल्ला	हुसैन गन्ज			

1	अनाथालय	दयानन्द वैदिक अनाथालय का उद्घाटन लाला लाजपत राय ने वर्ष 1908ईस्वी में बान्दा में किया था। 1
2	अनाथालय	वर्ष 1899 में स्वतन्त्रता सन्ग्राम सेनानी मदन मोहन मालवीय ने नागरी प्रचारणी पुस्तकालय की स्थापना के साथ बलखण्डी नाका स्थित अनाथालय की स्थापना की गई थी।

1	लाइब्रेरी	राजकीय जिला पुस्तकालय, जी आइ सी के पास, बान्दा
2	लाइब्रेरी	नागरी प्रचारणी पुस्तकालय, सन्कट मोचन के पास, बान्दा

उत्तर प्रदेश के बान्दा जिले में कई पुस्तकालय और पुस्तक सम्बन्धी सेवाएं उपलब्ध हैं। इनमें सबसे प्रमुख सरकारी जिला पुस्तकालय, बान्दा है।

पुस्तकालय ज्ञानार्जन का सशक्त मन्च होता है। संकट मोचन मन्दिर धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। पुस्तकालय शहरवासियों के लिए अध्ययन और ज्ञानार्जन का एक मजबूत सशक्त मन्च साबित होता है।

सरकारी पुस्तकालय

उत्तर प्रदेश की आधिकारिक राज्य पुस्तकालय वेबसाइट पर बान्दा में स्थित एक जिला पुस्तकालय का उल्लेख है।

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

राजकीय जिला पुस्तकालय, बान्दा

राजकीय जिला पुस्तकालय, जी.आई.सी. ग्राउन्ड, सिविल लाइन्स, बान्दा
स्थापना वर्ष 1985
खुलने का समय 09 – 05 बजे तक अवकाश– रविवार

4	पुस्तकालय कर्मचारी
36649	पुस्तकालय की किताबें
24205	'ई–ग्रंथालय की किताबें
4	समाचार पत्र
13	पत्रिका
70	मासिक उपयोगकर्ता

'2

सरकारी जिला पुस्तकालय

राज्य सरकार द्वारा संचालित प्रमुख सार्वजनिक पुस्तकालय है। इसकी सेवाओं, ई–लाइब्रेरी सुविधाओं और संभावित संपर्क विवरणों के बारे में अधिक जानकारी आधिकारिक सार्वजनिक पुस्तकालय पोर्टल पर मिल सकती है ।

नागरीय प्रचारणी पुस्तकालय

बान्दा में 124(1923ई) साल पुराने नागरीय प्रचारणी पुस्तकालय है।

शहर के बान्दा–महोबा रोड पर कचहरी के पास, सन्कट मोचन मन्दिर के पास, वर्ष 1899 में स्वतन्त्रता सन्ग्राम सेनानी मदन मोहन मालवीय ने नागरी प्रचारणी पुस्तकालय की स्थापना कराई थी। उसी समय बलखण्डी नाका स्थित अनाथालय की स्थापना की गई थी। रख–रखाव के अभाव में दोनों जीर्ण–शीर्ण हो गए है। उस समय का जिले का पहला पुस्तकालय था जहां पर छात्र–छात्राएं बैठ कर पुस्तकों के जरिए ज्ञान अर्जित करते थे।

पुस्तकालय में विभिन्न भाषाओं की हिन्दी की कहानी, उपन्यास, इतिहास की किताबों का बड़ा संग्रह था। इससे प्रकाशित हिन्दी, इतिहास, उपन्यास, कहानी सन्ग्रह के साथ ही कुछ प्रतियोगी किताबें रही थी।

पुरानी किताबें नष्ट होने के बाद नई नहीं आई। इस कारण धीरे–धीरे छात्र–छात्राओं ने आना कम कर दिया। पिछले एक दशक से यह पूरी तरह से बन्द चल रहा है।

जनश्रुति है कि उद्धार हेतु योजना तैयार की जा रही है। भगवान जाने कब उद्धार होगा? म्यूजियम की तरह के हालात तो नहीं होगा?

अन्य पुस्तकालय और अध्ययन केंद्र

बान्दा क्षेत्र और उसके आसपास कई अन्य निजी और सामुदायिक पुस्तकालय और स्व–अध्ययन केंद्र उपलब्ध हैं, जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी सहित विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

नाका

मुख्य रूप से शहर के द्वार, चेकपॉइंट या टोल बूथ को संदर्भित करता है , जो किसी कस्बे, क्षेत्र या सड़क में प्रवेश की जांच या नियंत्रण के लिए एक स्थान के रूप में कार्य करता है। यह एक गली के कोने, चौराहे या प्रवेश द्वार को दर्शाता है।

नाका (नाका) के मुख्य अर्थ व संदर्भानुसार उपयोग

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

एक ऐसा स्थान जहाँ अधिकारी करों की निगरानी या वसूली करते हैं। नाका बंदी (नाकेबंदी) भी एक पुलिस अवरोध है।

प्रवेश द्वार किसी शहर या इलाके में प्रवेश करने का मुख्य स्थान।

चौराहा वह कोना जहाँ सड़कें मिलती हैं।शहरों में विशिष्ट स्थानीय चौराहों को संदर्भित करने के लिए आम है।

विभ्पिन्न भाषाओं में अर्थ अलग अलग होता है। जैसे कन्नड़ में नाका का अर्थ स्वर्ग या जन्नत हो सकता है, जबकि जापानी भाषा में नाका का अर्थ संबंध/मेलजोल होता है।

1	नाका/मौहल्ला	किन्नी/खिन्नी नाका
2	नाका/मौहल्ला	गूलर नाका
3	नाका/मौहल्ला	बलखण्डी नाका
4	नाका/मौहल्ला	मडिया नाका
5	नाका/मौहल्ला	मरदन नाका वैश्या का स्थान
6	नाका/मौहल्ला	धान्ती नाका, शरारती व नाचने वाली स्त्री का स्थान
7	नाका/मौहल्ला	कटरा नाका
8	नाका/मौहल्ला	मेवाती नाका

धर्मशाला व सराय

1	सराय	अवस्थी धर्मशाला
2	सराय	जैन धर्मशाला
3	सराय	सेक साहब की सराय
4	सराय	नवाब साहब की सराय
5	सराय	मेमसाहब की सराय (क्योटरा के दक्षिण में)
6	सराय	बड़ी सराय शहर के बीचो–बीच है, नजरबाग के बिल्कुल पास
7	सराय	मायने;डंलदमद्धकी सराय
8	सराय	मेहमान सराय

बाजार

1	बाजार	अरदली बाजार
2	बाजार	कैथी बाजार
3	बाजार	चौक बाजार
4	बाजार	छोटी बाजार
5	बाजार	दुर्गा बाजार
6	बाजार	सट्टी बाजार दूध के लिए
7	बाजार	जामा मस्जिद, बकरा मण्डी
8	बाजार	नवाब तालाब, बकरा मण्डी
9	बाजार	फूल चौराहा
10	बाजार	गलवल बल्ला आढ़त जमालपुर के ठाकुर का, पुराना नार्मल स्कूल व कैथी बाजार के पास

मन्दिर/ गुरुद्वारा /चर्च/ ईमामबाड़ा

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

1	मन्दिर	कालिका मां मन्दिर
2	मन्दिर	काली देवी मन्दिर बाबू लाल चौराहा
3	मन्दिर	चौसठ जोगिनी
4	मन्दिर	पहाडी बाबा मन्दिर
5	मन्दिर	पन्चमढ़ी मन्दिर
6	मन्दिर	बम्बेश्वर
7	मन्दिर	महा माई मन्दिर
1	चर्च	3 चर्च रोडवेज के पास व ए314 के दोनों तरफ
2	जैन	
3	गुरुद्वारा	सिन्धी
4	ईमामबाड़ा	मुस्लिम फाइल

मस्जिद

1	मस्जिद	मुख्य ईदगाह
2	मस्जिद	शेख सरवर मस्जिद
3	मस्जिद	मरकज मस्जिद
4	मस्जिद	रब्बानिया मस्जिद
5	मस्जिद	क्वेटरा मस्जिद
6	मस्जिद	बौडा मस्जिद
7	मस्जिद	गौसिया मस्जिद
8	मस्जिद	पीरा मस्जिद
9	मस्जिद	गुलाब बाग मस्जिद
10	मस्जिद	छावनी मस्जिद
11	मस्जिद	जरैली कोठी मस्जिद
12	मस्जिद	ऊन्ट मोहाल मस्जिद
13	मस्जिद	कच्चा तालाब मस्जिद
14	मस्जिद	आजाद नगर मस्जिद
14	मस्जिद	निम्नी पार मस्जिद
16	मस्जिद	जिला कारागार
17	मस्जिद	हाजी सरदार मस्जिद

ताजिया– सब्जी फरोशों का, कुदौवा जनाना का, मनिहारों का, खुटलों का, ढपलियों का,

तालाब

1	तालाब	कच्चा तालाब
2	तालाब	कजलिया तालाब, निम्नी पार
3	तालाब	कन्धरदास तालाब
4	तालाब	कलामत ताला
5	तालाब	केवटन तालाब, केवटरा
6	तालाब	गौरी बाबू का तालाब
7	तालाब	नवाब तालाब
8	तालाब	परशुराम तालाब, गायत्री नगर
9	तालाब	प्राची तालाब
10	तालाब	प्रागी तालाब
11	तालाब	बडा तालाब, तिदवारी रोड
12	तालाब	बाबा तालाब इन्दिरानगर के उत्तरी छार पर
13	तालाब	साहब तालाब, जरैली कोठी, कर्बला रोड
14	तालाब	सेढू तलैया
15	तालाब	शिर्डी तलैया ़गगगगगग
16	तालाब	हरदौल तलैया

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

17	तालाब	भरभूजन का तालाब, मढ़िया नाका
18	तालाब	राजा का तालाब, खिन्नी नाका, गुमान सिन्ह ने मरम्मत कराया।
19	तालाब	छाबी तालाब
20	तालाब	लोहार तलैया, मर्दन नाका
21	सन्दर्भ	

/3

कुआ

1	कुआ	कालू कुआ
2	कुआ	गुरहा कुआ
3	कुआ	परशुराम तालाब, गायत्री नगर के पास
4	कुआ	फूटा कुआ, कालका चौराहा के पास, पल्हरी रोड
5	कुआ	बाकरमण्डी कुआ
6	कुआ	बुधराम कुआ
7	कुआ	लोधा कुआ, बस स्टैन्ड जीपीएस
8	कुआ	लोहार कुआ लोहार तलैया, मर्दन नाका के पास
9	कुआ	,शुकुल कुआ
10	कुआ	दरोगा कुआ, झण्डा चौराहा के पास
11	कुआ	कचहरी

लगभग 1908ई साल और उसके लगभग यहां के अधिकतर कुए मीठे थे, मीठे पानी से भरे रहते थे। लेकिन 1908 में केन में ऐसी बाढ़ आई की आधा शहर डूब गया जिसके कारण इन महलों के अर्थात बान्दा के महलों के कुएं भी खारे हो गए। आबादी को मीठे पानी के मिलने में बहुत अधिक परेशानी होनी लगी। इस परेशानी को दूर करने के लिए नवाब साहब के बनवाए गए मीठे पानी के कुआं से तथा तालाब से नलों का प्रबन्ध किया गया परंतु यह योजना अधिक सफल न हो पायी। इसके पीछे, आबादी जो लगातार बढ़ती जा रही थी, भी एक कारण था। इसके लिए केन नदी का पानी रोक कर, नल के द्वारा पानी पहुंचाने का प्रबन्ध किया गया बामेश्वर पहाड़ पर पानी का बड़ा स्टोर बनाकर, वहां से नगर की आबादी को पानी पहुंचाया गया, जिससे पानी का कुछ सन्कट दूर हुआ। 1971 की जनगणना के मुताबिक बान्दा शहर की आबादी लगभग 60000 थी। /4

बाग

1	बाग	आम बाग
2	बाग	गुलाब बाग
3	बाग	नजर बाग
4	बाग	पोडा बाग
5	बाग	बेरी बाग

नार/नाला

1	नार युद्ध	करिया नार
2	नार युद्ध	कलामत नाला
3	नार युद्ध	गवाईन नार 8किमी बान्दा से मुख्य सड़क पर
4	नाला	गवाईन
5	नाला	निम्नी नाला बान्दा के अन्दर
6	नाला	क्वेटरा नाला बान्दा के अन्दर
7	नाला	कहली नाला
8	नाला	कलामत नाला
9	नाला	निम्नी नाला

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

दुर्ग

1	दुर्ग	बाबू लाल किला, बजरंग स्कूल के पास
2	दुर्ग	भूरागढ़ किला
3	दुर्ग	रन गढ़नरैनी,
4	दुर्ग	स्योढ़ा
5	दुर्ग	कालिन्जर

1	क्लब	जहीर क्लब
2	क्लब	हार्पर क्लब
3	क्लब	राईफल क्लब

1	स्कूल	जीआई सी स्थापित.........
2		डी ए वी
3		बजरंग
4		नार्मल स्कूल

1	सन्ग्रहालय	बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय, जीआर 25.483486, 80.3423507

बान्दा के मुख्य मार्गों पर इन मुहल्लों की निम्न लोकेशन है।

1 बलखण्डी नाका चौराहा पुलिस चौकी से सीधा महेश्वरी मन्दिर चौक बाजार गूलर नाका होते हुए बाबूलाल चौराहा गुरहा कुआं से कोतवाली चौराहे तक
इसमें निम्न मोहल्ले भी आएंगे बाकरगन्ज बलखण्डी नाका छावनी, मर्दन नाका, अलीगन्ज, चौक बाजार आदि

2 नजर बाग नवाब साहब की सराय, प्रकाश टाकीज के सामने शन्कर गुरु चौराहा से फूलों वाली रोड
इसमें मर्दन नाका गूलर नाका आएगा

3 महेश्वरी देवी मन्दिर से रामलीला मैदान होते हुए पंजाब नेशनल बैंक चौराहा
यहां आएंगे बाकरगन्ज, छावनी

4 अमर टॉकीज चौराहे के बाद जामा मस्जिद होते हुए जिला परिषद चौराहा तक
इसमें आता है अलीगन्ज

5 महेश्वरी देवी चौक से दुर्गा बाजार होते हुए डी ए वी स्कूल तक
इसमें आते हैं दुर्गा बाजार, मर्दन नाका

6 चौक बाजार से वाया कोतवाली इलाही कपड़े वालों की दुकान से आगे चिपेटरी होते हुए झण्डा चौराहा तक इसमें आएगा चौक बाजार छिपटहरी छोटी बाजार

7 पीली कोठी से छावनी चौराहा, सब्जी मन्डी, चौक, नयागन्ज होते हुए मनोहरी गन्ज तक
इसमें आएगा चौक बाजार गूलर नाका, मर्दन नाका

8 पद्माकर चौराहा से जीजीआईसी, बाकरगन्ज पंजाब नेशनल बैंक चौराहा होते हुए
इसमें आएगा बाकरगन्ज, छावनी

9 डिग्गी चौराहे से छावनी, स्टेशन रोड पीली कोठी सिन्धी कॉलोनी बाबूलाल चौराहे होते हुए काली देवी मन्दिर

इसमें आएगा छावनी अलीगन्ज

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

10 डिग्गी चौराहा से रेलवे क्रॉसिन्ग अशोक लाट चौराहा, जजी चौराहा
इसमें आएगा कटरा क्योटरा सिविल लाइन

11 अशोक लाल चौराहे से सन्कट मोचन जेल चौराहा महोबा रोड नदी बैरियर
इसमें आएगा क्योटरा

12 जजी चौराहे से बस अड्डा होते हुए किरण कॉलेज चौराहा तक
इसमें आएगा सिविल लाइन कालू कुआं

13 बलखण्डी नाका पुलिस चौकी से कटरा चौराहा किरण कॉलेज
इसमें आएगा बलखण्डी नाका, कटरा

14 पद्माकर चौराहे से अनाथालय होते हुए बलखण्डी नाका पुलिस चौकी तक
इसमें आएगा बलखण्डी नाका

15 कालू कुआं चौराहे से तिन्दवारी रोड
इसमें आएगा कालू कुआं, चमरौडी, अलीगन्ज, परशुराम तालाब

17 चमरौडी से बाबूलाल चौराहा कालू कुआं चौराहा
इसमें आएगा सिविल लाइन

18 डाक बन्गला, मवइ बुजुर्ग, लड़ाका पुरवा, भवानीपुरवा, हरदौली

बान्दा की पुरानी एकमात्र मिल तेल की थी जो रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म न01 बायें चल कर थी। कनवारे के तिवारी की तेल फैक्टरी थी, जो अब बन्द व खत्म है।

एक सड़क बनी हुई है जो छावि तालाब तक गई हुई है, तक <u>नवाब का इमामबाड़ा</u> है। इस बिन्दु से पूर्व की तरफ <u>धान्ती इमामबाड़ा</u> के पूर्वी हिस्से तक जा सकते हैं। इसके थोडे दक्षिण में(वर्तमान)<u>कोतवाली</u> है। उधर से दक्षिण में वर्तमान सड़क से <u>हठेटी पुरवा</u> विद्यमान है।

उस वक्त बान्दा, निम्नी नाका व उसके के दक्षिण तक फैला हुआ था जहां पर राजा के महल और स्टेट अफसरों के घर बने हुए थे। किरणी नाका या किनी या किन्नी नाका से दक्षिण और पूर्व तक और मढ़िया /मरहिया नाका से टैंक के पश्चिम तक, अन्तिम दो जगहें जिनमें लड़ाका पुरवा(लरंका पुरवा) मोहल्ला खुटला जो पहाड़ के ढलान पर है, को शामिल कर लेता है और भवानी पुरवा(एक छोटा गान्व) से उत्तरी तरफ महेश्वरी देवी का मन्दिर है।

यह बुन्देलों के द्वारा छोड़ी गई राजधानी भी थी।

1805 में शमशेर बहादुर के द्वारा ब्रिटिश को समर्पित करने पर, उसके आवास के लिए शहर के आसपास ;त्मबपदबजेद्ध जमीन आवन्टित की गयी थी। वह और उनके बच्चों के द्वारा, दक्षिण और शहर के पूर्व में कोतवाली से, की तरफ ले जाते और पूर्व की तरफ ले जाते हुए वर्तमान कोतवाली से कर्वी रोड के दक्षिण की तरफ बाग तक ली गई थी और यह छोटी सी जगह लश्कर के नाम से जानी जाती थी और यह नवाब के महल को शामिल किए हुए था। इसके अलावा मिश्रित जनता भी रहती थी और मराठा सेना दक्षिण से और उनके सेना के पुराने मकान जो अब पुलिस लाइन के रूप में बदल चुके है, तक फैले थे।

हिम्मत बहादुर के समय से उनके साथ गोसाई भी आकर वर्तमान कस्बे के उत्तर पूर्व की तरफ सन्स्थापित हो गए थे।

ब्रिटिश के समय बान्दा, बुन्देलखण्ड प्रान्त का मुख्यालय हो गया था और अपनी महत्ता को तेजी से बढ़ाने लगा।

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

गोसाई और नवाबों के बड़े सन्स्थानों व रहने सहने की जगह के कारण तरह–तरह के शिल्पकार व व्यापारी उत्साहित होकर पनपने लगे। राजा के तालाब और गोस्वामी आवासीय स्थान के बीच में तेजी से पनपने लगे राजा का तालाब और गोसाई आवास के बीच की जगह भर गयी। शहर भी उत्तर पश्चिम की तरफ बढ़ने लगा और एक छोटा सा अन्ग्रेजों का कब्रिस्तान के चारों तरफ और साथ ही कान्धार दास तालाब के चारों तरफ फैल गया।

अर्दली ;व्तकमतसलद्ध ६ ऑर्डरली बाजार जो मिस्टर मायने;डंलदमद्धकी सराय के आगे से होकर जाता था, उस वक्त मिस्टर रिचर्डसन के समय में बना था जो 1812ई0 में गवर्नर जनरल का एजेंट था।

मोहल्ले –सिविल लाइंस

जितने भी अंग्रेजों के समय के शहर हैं, उन सभी शहरों में, जिनमें बान्दा भी शामिल है, सिविल लाइंस मौजूद है। यह अंग्रेजो के द्वारा बसाया गया एक मोहल्ला है। सिविल लाइंस का इतिहास अंग्रेजों के आने के समय से है। लगभग 1800 ई के समय, अंग्रेजों ने भारत पर राज करना शुरू किया। अंग्रेज हमेशा भारतीयों के बीच काले गोरे का फर्क किया करते थे और रंगभेद नीति के तहत, निम्न स्तर का समझते थे।

हिंदुस्तानियों को अंग्रेजों के साथ बैठने, खाने, यहां तक कि उनके इलाके में जाने तक की अनुमति नहीं थी। अपने को हिन्दुस्तानियों से अलग रखने के लिए, अंग्रेजों ने अपना अधिकारियों के लिए एक अलग इलाका बसाया जहां भारतीय जा ही नहीं सकते थे। यहां बड़े–बड़े बंगले, जो एक–एक हेक्टेयर से ज्यादा की जमीन पर बनाए गए थे। उस इलाके में डांस और मनोरंजन के क्लब भी बनाए गए जो शहर के सबसे महंगा इलाके हुआ करते थे। हिंदुस्तानियों के जो कुछ रसूखदार लोग हुआ करते थे वह उसे इलाके में रह सकते थे। उस जगह पर व्हाइट टाउन यानी सिर्फ अंग्रेजों के जाने की जगह भी होती थी। यह इलाका सिविल अधिकारियों को अन्य नागरिकों से अलग किया करता था। बस इसी वजह से इलाके का नाम सिविल लाइंस पड़ गया। वर्तमान में इन इलाकों में और उनके द्वारा छोड़े गए बंगलों में भारत सरकार के बड़े अधिकारियों को रहने की इजाजत दी जाती है, व रह सकते हैं।

सिविल स्टेशन (प्रशानिक अधिकारियों के रहने की जगह) रहने की जगह या वह जगह जहां पर ऑफिसर अधिकारी लोग रहते हैं, शहर के उत्तर में है, जिस के कुछ हिस्से पर तहसील व रेलवे स्टेशन का कब्जा है। इस आवास(क्वार्टर) को मिस्टर रिचर्ड्सन ने बनवाया था जिसे पहले बख्शी रिचर्ड्सन के नाम से जाना जाता है। बाद के वर्षों में विद्रोह (म्यूटिनी) तक जिले के कलेक्टर के कब्जे में रहा वह उनका निवास स्थान बना रहा। इसके सामने के 2 मन्जिल इमारत में मिस्टर वारिंग(तपदह) रहते थे जो ;श्र्वजीम मअमत डमउवतंइसम ैमजजसमउमदजष्द्ध ऑफ द एवर मेमोरेबल सेटलमेंट के लेखक थे।

जज और मजिस्ट्रेट भी इसी जगह पर थे जो अब (1900 ईस्वी) के लगभग सेसन जज का आवास था और जरैली कोठी जिसके अवशेष, हमीरपुर रोड के पश्चिमी दिशा की तरह ऊंचे स्थान पर उपलब्ध है, को अपील के सेशन जज (सेशन ऑफ द जज ऑफ अपील) के लिए बनाया गया था। यह महाशय साल में दो बार बनारस (वर्तमान 2022 में वाराणसी) से आते थे। यह आवास कोठी बार–बार आग से नष्ट होती रही हैं। वर्तमान 1909 में अब शहीदों की कब्र के रूप में स्थापित है। अकेला मेहराब उस घर की अकेली पहचान बची है।

कलेक्टर का कार्यालय/ऑफिस पहले पुराने सैशन हाउस में बनाया गया था। 1820 में नया ऑफिस बना जो उत्तर में ऊंची जगह पर बना था, अब ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट का बन्गला वहां पर अवस्थित है। 20 साल बाद ऑफिस को नया भवन दिया गया जो अब शहर के निचले मैदान में स्थित है।

शहर के सन्दर्भ में रिचर्डसन के वारिसों ने राजा के तालाब को भराना शुरू कर दिया और मिस्टर मेनवारिंग तक जारी रहा। मेनवारिंग की बाजार, जिसकी सीमा पुराने तालाब तक थी, मनोरी गन्ज के नाम से जाना जाता है।

रेलवे स्टेशन के उत्तर में बन्गाली पुरवा बसा हुआ है। यह मोहल्ला सरकारी ऑफिसों में कार्यरत बन्गाली क्लर्कों के रहने की जगह थी।

बन्गाली पुरवा के उत्तर और सिविल स्टेशन को कहली नाला अलग करता था और कहली नाला से दूसरी तरफ कैन्टोनमेन्ट/छावनी क्षेत्र है। अधिकारियों के आवास तिन्दवारी हमीरपुर सड़क के दोनों तरफ बने थे जबकि

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुलिस लाइन/ सिपाही लाइन उसके उत्तर में हैं। इससे आगे परेड ग्राउन्ड और आगे यूरोपियन कब्रिस्तान है पूर्व से लगा राइफल रेन्ज/ निशानेबाजी/ चान्दमारी है। गोली रोकने के लिए बनाया गया मिट्टी की दीवार आज भी नजर आती है (2022 ई में)।

वर्तमान हमीरपुर रोड के पश्चिम में, नाले द्वारा बहुत मिट्टी काट दी गई है, पर रेस कोर्स घुड़सवारी मैदान था, आज भी है। इस मैदान को पुरानी कालपी सड़क द्वारा दो भागों में बान्ट दिया गया है। पुरानी कालपी सड़क व इसके अवशेष कलवर्ट/पुलिया आज भी हैं और दिखाई देते है।

विद्रोह के समय लगभग छावनी और अधिकान्श सिविल लाइन को जलाकर जमीन्दोज़ कर दिया था।

नवाब के द्वारा निम्नी नाले के दूर बुन्देला महलों को नष्ट करा दिया गया था और फिर कभी उनका पुनर्निर्माण ना हो सका। इसके बाद विद्रोहियों के कारण स्वयम् नवाब निर्वाचित होकर भाग गए। सम्पत्ति को जप्त कर दिया गया और उसके सैनिकों को तितर–बितर कर दिया गया। सारे सन्स्थानों पर कब्जा कर लिया गया।

इसके बाद से बान्दा भीषण पतन की ओर अग्रसर इस हो गया। 1853 ई में जनसन्ख्या 42788 थी जो उन्हें 1865 ई में घटकर 27578 रह गई। पलायन उच्च्य स्तर पर था।

सिविल स्टेशन को पुरानी जगह पर पुनः बनाया गया लेकिन 1888 ई0 तक बन्द रहा। इसी साल 1888ई0 में जमीन को कब्जे में लिया गया और खुदाई कर नया सिविल स्टेशन और कलेक्टर का घर बनाया गया। एसपी को डॉक्टर होय द्वारा हटा दिया गया और कहली नाले से दूर ऊंचे स्थान पर स्थापित कर दिया गया जो कैंटोनमेंट क्षेत्र का हिस्सा बना। (2022 ई – मयूर भवन –महाराणा प्रताप चौराहे से जे एन डिग्री कॉलेज की तरफ जाते हुए रास्ते में मयूर भवन है, डी एम का आवास।

महिला अस्पताल के सामने नया एसपी का घर है।
चान्दमारी आईटीआई जरैली कोठी के सामने है।
जेल अछरौड़ कप्सा मौदहा हमीरपुर रोड है।
कृपया चेक करें राठ के पास माहुल गान्व तो नहीं।

बान्दा में गैरीसन विन्ग थी जिसकी मातृ इन्फेन्ट्री रेजीमेंट नौगान्व में थी। गैरीसन विन्ग 1889 ई0 तक बान्दा में बना रहा। 1889 ई0 में इन्फेन्ट्री लाइन को खत्म कर दिया गया और उसकी भवनों को स्वयम् गिरकर खत्म होने के लिए छोड़ दिया। सार्जेन्ट आवास कुछ समय तक डाक बन्गला और पुराने अस्पताल के रूप में प्रयोग होते रहे। उन भवनों के बीच के आवास/छोटे–छोटे घर अब सिविल अधिकारियों के द्वारा आवास के रूप में उपयोग में आने लगे। पुराने सिविल स्टेशन में बचे शेष दो घर अब गोस्पल के प्रचार के लिए मिशनरी ऑफ सोसाइटी के द्वारा कब्जा कर लिए गए हैं।

1858 ई में कलेक्टर द्वारा अधिग्रहित भवन के मलबे से बने अच्छे से बन्गले में सेशन जज रहने लगे।

4

बान्दा के मोहल्ले या वार्ड

लगभग 1900 ईसवी में, बान्दा को 15 मोहल्ला या वार्ड में बान्टा गया था जिनको सामान्य रूप से नाका कहते थे। वे निम्न है।

1. बलखण्डी नाका –एक मुख्य मतानुसार नाका का नामकरण बलखण्डी महादेव भगवान के नाम पर आधारित है। प्रसिद्ध बलखण्डी महादेव की मूर्ति कालिन्जर में पाई गई है।

अन्य जनश्रुति के अनुसार नाका का नाम एक फकीर बलखण्डी बाबा के नाम पर आधारित है। फकीर का तकिया एक छोटे मन्दिर से जाना जाता है और यही बलखण्डी नाका नाम का कारक हो सकता है।

2. छाबी नाका –इसका नामकरण पहाड़ के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में तालाब बनवाने वाले के नाम पर रखा गया है

3. भवानी पुरवा– पहले ही इस पुस्तक में काफी विस्तृत रुप से बताया जा चुका है

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

4. लड़ाका पुरवा –इसके बारे में भी इसी पुस्तक में पहले काफी कुछ बताया जा चुका है

5.धान्ती नाका – धान्ती नाका का नामकरण, सदर मोहल्ला नवाब शमशेर बहादुर की एक शरारती व नाचने वाली स्त्री, जो वहां रहती थी, के आधार पर है

6. अलीगन्ज –करवी / कर्वी सड़क के पूर्व की तरफ अलीगन्ज पड़ता है इसका नाम नवाब अली बहादुर से लिया गया है इसी के नजदीक अली बहादुर का निवास था।

7. कॉल्विन गन्ज –1800ई0 में लेफ्टिनेंट गवर्नर के आगमन को यादगार बनाने हेतु इसका नाम रखा। यह उत्तर पश्चिम में है।

8 कटरा नाका –यह उस समय का मुख्य बाजार व वार्ड था।

9.खुटला –बान्दा पहले ही इसके बारे में विस्तार से लिखा जा चुका है।

10. किरनी किनी या खिन्नी नाका –

11. मरहीया नाका– पुस्तक में विस्तार से बताया जा चुका गया है।

12. गुलर नाका–

13. मकबरा –

14. मेवाती नाका – मेवातिओं के टाइटल नाम से लिया गया है जो नवाब के कर्मचारी थे और यहीं रहते थे।

15. मर्दन नाका –यहां पर कुआं बनवाने वाले के नाम पर इस नाके का नाम रखा गया है।

बहुत से मोहल्ले नाका नष्ट/ खत्म और भुलाये जा चुके हैं या फिर नए नाम ग्रहण कर चुके हैं, अतः उनका पता करना मुश्किल है।

म्युनिसिपल काम के लक्ष्य हेतु पालिका कार्य क्षेत्र के लिए चार वार्डो को पहचान कर बान्टा गया था।
1. बलखण्डी नाका
2. मर्दन नाका
3. कलवन गन्ज
4. अलीगन्ज

इमामबाड़ा–   रामा का इमामबाड़ा, भाऊराम तय्या का इमामबाड़ा

पूरे भारत में शायद बान्दा एक ऐसा इकलौता जिला है, जहां मुहर्रम की शुरुआत ही एक ब्राह्मण परिवार ने की थी।

बान्दा में 275 (वर्तमान 2025ईस्वी में) साल पहले मोहर्रम की शुरुआत पुणे से आये एक मराठा परिवार ने की थी। इमामबाड़ों में बान्दा का सबसे ऐतिहासिक और पुराना रामा का इमामबाड़ा है। इमामबाड़े की स्थापना 1750 ईस्वी में पुणे से आये मराठा ब्राह्मण रामा राव ने की थी। यह इमामबाड़ा बान्दा का पहला इमामबाड़ा था। बान्दा में पहली बार इमाम हुसैन की याद में ढाल उठाई गई थी। जनश्रुति के अनुसार, तब से लेकर आज तक रामा के वंशज मुहर्रम के 10 दिन नन्गे पैर रहकर, जमीन में सोकर और व्रत रखकर इस परंपरा को निभाते चले आ रहे हैं। निवास कहां है पता नहीं चला।

1765 ईस्वी में इसी परिवार की महिला लक्ष्मी और उनके परिजन भाऊराम ने एक दूसरा इमामबाड़ा स्थापित किया जो भाऊराम तय्या का इमामबाड़ा के नाम से जाना जाता है। 70प्रतिशत हिन्दू हुसैन की आस्था में सराबोर होकर

ढाल निकालते हैं। आग के अलाव में कूदकर अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करते हैं।
रु6,रु7

(इतिहास) नॉर्वेजियन इन्ग्लिश कब्रिस्तान
नॉर्वेजियन–इन्ग्लिश कब्रिस्तान

पिछले 200 सालों से बान्दा में अन्ग्रेज़ों की आत्माएँ शान्ति से यहाँ विश्राम कर रही हैं। बान्दा के कालूकुवां–फ्लाईओवर रोड पर स्थित यह कब्रिस्तान भारत पर ब्रिटिश शासन के दौरान अन्ग्रेजी गौरव के इतिहास को समेटे हुए है। यह लगभग दो शताब्दियों से बान्दा और उसके भूतपूर्व और वर्तमान निवासियों के जीवन और उस अवधि के दौरान घटित सभी घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी है। चाहे वह 1857ई0 का विद्रोह हो या नवाब बान्दा का काल या फिर भारत का स्वतंत्रता सन्ग्राम, वे सभी यादें आज भी इस ज़मीन के टुकड़े पर सन्जोए हुए हैं जो इतना स्थिर और कमतर महसूस होता है। लेकिन यह सब कम से कम भारत जैसे देश में इसके महत्व को कम नहीं कर सकता जहाँ कब्रों का मतलब पवित्र होता है।

बान्दा शहर अति पिछड़ा **(Straggling-** अति पिछड़ा**)** हुआ है और खराब तरीके से बसा हुआ है उबड़–खाबड़ और पथरीली जमीन पर शहर बसा हुआ है और उबड़–खाबड़ और पथरीली जमीन मीलों तक फैली है। बड़े–बड़े पत्थर एक दूसरे के ऊपर प्राकृतिक रूप से और रखे व पड़े हुए है जो दूर से आकर्षित करते हैं (2021 ईस्वी तक आधुनिक मशीनों से काफी हद तक समतल किया जा चुका है) इन नग्न पत्थरों को छोटी–छोटी झाड़ियों, बड़ी झाड़ियों और पेड़–पौधों ने ढ़ककर सुन्दर रूप दे दिया है।

पूरे इलाके में जगह–जगह बहुत सारे छोटे छोटे खराब दशा में मन्दिरों की भरमार है। किसी किसी में समयानुसार आधुनिकता का समावेश है।;।अमदनमेत्र मार्ग ळतववअमेत्र बगीचेद्ध शहर के दक्षिणी पूर्वी भाग में कुछ शानदार मार्ग और बगीचे स्थित हैं। शहर खुद में बेतरतीब रूप से बसा हुआ है। जिसने जहां चाहा और जैसे चाहा, मकान, गान्व, मोहल्ले, सड़के बना ली। पुराने शहर में आज भी (2022 ई0) में मिट्टी व खपरैल के मकान बने हैं जिनके देखभाल करने वाले इतने गरीब हो चुके है कि उनकी मरम्मत भी नही करा सकते।

मुख्य सड़कें फिर भी कुछ चौड़ी हैं और पानी की निकासी और सफाई सराहनीय है, जिनकी सन्युक्त प्रान्त (यूनाइटेड प्रोविंसेस–वर्तमान का उत्तर प्रदेश) के प्रमुख शहरों से तुलना की जा सकती है। ऊंचे मैदान से पूर्व की तरफ और बुन्देलों के मोहल्लों से दक्षिण की तरफ दृष्य दर्शनीय है। किसी भी तरफ देखा जाए, सफेद मन्दिर जगह–जगह, पहाड़ी, ऊंची मैदान कहीं भी, उग आए हैं। पहाड़ी जगहों पर ऊंचे स्थानों पर भी बन गए हैं, मौजूद हैं इसके अलावा मस्जिद व उसकी सुन्दरता व सुन्दर दर्शनीय है और मीनारें बहुत दूर से नजर आती हैं।

तालाब– शहर में जगह–जगह छोटे बड़े तालाब हैं जो प्राकृतिक और मानव निर्मित हैं। लेकिन उनमें किसी भी आर्किटेक्चरल वास्तु कला या शिल्प विद्या का अभाव है। सबसे बड़ा तालाब छावि तालाब है जो पहाड़ की तलहटी व पहाड़ के करीब बना है। छवि तालाब में ईटों का काम अच्छा है और वहां घाट बने हुए हैं। इसके उत्तर पश्चिम में कान्धार दास का तालाब है। उसी के पास उबड़ खाबड़ जमीन पर एक छोटा तालाब है, जिसका ढलान केन नदी के नष्ट हो रहे घाट की तरफ है और यह घाट, नदी को पार करने वाले पुराने रास्ते पर है।

(Precencts- परिसीमा**)** रेलवे लाइन के अड़ोस पड़ोस /परिसीमा व सीमान्त के पास और शहर के परिसीमा में पारस राम बहादुर का तालाब है। इसी के उत्तर में गौरी बाबू का तालाब है, जिसके किनारे अन्शतः ईटों से बने हैं। इसके नीचे की तरफ पूर्व में उजड़ा हुआ रेलवे बन्गला है। पूर्व की तरफ प्रागी तालाब और आगे दक्षिण की तरह निम्नी नाला है।

बबेरू रोड पर आगे नवाब का रेस कोर्स और रास्ते पड़ते हैं। जो अब नहर का क्षेत्र है यह विभिन्न जगहों को जाने वाले रास्तों को जोड़ता है। मुख्यतः कर्वी कालिन्जर सड़कों को मिलाता है।

कलेक्टर कार्यालय और जज की कोर्ट नई तहसील में है। डाक बन्गला, जिला इन्जीनियर कार्यालय और पोस्ट ऑफिस /डाक खाना रेलवे स्टेशन के बिल्कुल पास है जो कस्बे के उत्तर में हैं।

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कहली नाला के आगे ऊंचे मैदान है जिसमें जिला के अधिकारियों का निवास और पुराना चर्च है। पुराना चर्च का पुनर्निर्माण किया गया था क्योंकि विद्रोह के समय इसे उड़ा दिया गया था। धमाके से थोड़ी बहुत ही दीवार बची थी। फिर भी टिन्ड कान्च की खिड़कियां जो बची हुई थी, उनको भी हटाकर सुरक्षा कारणों से जमीन में गाड़ दिया गया था।

जेल महोबा रोड के साथ ही बनी है।

शिल्प कला से सम्बन्धित कोई भवन या उनके अवशेष बान्दा में नहीं है। कहा जा सकता है शिल्प की दृष्टि से बान्दा शून्य हैं।

नवाब अली बहादुर के नाम पर ''बड़ी सराय'', एक मस्जिद और कालिन्जर रोड पर एक तालाब है। सराय, शहर के बीचो–बीच है और नजरबाग के बिल्कुल पास में बसा हुआ है इसके बारे में कहने के लिए कोई विशेष बात नहीं है।

बाहर से आने जाने वालों के रहने की जगह को सराय कहते हैं।

मस्जिद मस्जिद काफी बड़ी जगह पर बनी हुई है और दो किनारों पर दो मीनारें बनी हुई हैं, जो 120 फुट ऊंची हैं। ये मीनारें ऊंचे स्थान पर बने होने के कारण बहुत मीलों दूर से दिखाई देती हैं। तालाब भी बहुत बड़ा है और चौकोर है। प्रत्येक दिशा लगभग 200 फुट चौड़ी है। इसके किनारे ईंटों से निर्मित है, इस तरह से यह 200 वर्ग फीट की भुजा वाला एक वर्ग बनाता है। तालाब में ईटों के कार्य वाली सीढ़ियां बनी हैं जो काफी गहरी हैं और इन्हीं से होते हुए पानी की सतह तक जाया जाता है।

1930 ईस्वी में इसके पश्चिम दिशा की तरफ ध्वस्त नष्ट निवास स्थानों पर सरकार ने पीडब्ल्यूडी (पब्लिक वर्क डिपार्टमेंट) के अवकाश प्राप्त अधिकारी से खरीद लिया था। यह अधिकारी बहुत पहले भारत छोड़कर जा चुका था। इन निवास स्थान को पुनः निर्माण में शामिल कर नए भवन बनाए गए और सिन्चाई विभाग के कार्यालय में परिवर्तित कर दिए गए। यह सिन्चाई विभाग केन नहर सम्भाग से सम्बन्धित था। अब जो पानी नहर से आता था, से तालाब लगातार भरा जाता रहता है। इसी तालाब के पानी का उपयोग, तालाब से लगभग 300 गज दूर उत्तर में स्थित एश बाग, नवाब के बगीचों को सींचने के काम आता है। कर्वी और कालिन्जर सड़क के मिलान केंद्र पर स्थित यह एश बाग के नाम से प्रसिद्ध है और सिन्चाई विभाग के प्रबन्धन के अन्तर्गत आता है।

नवाब के महल और दूसरे शहर के मकान (1900 ईस्वी में) शहर के बीच बहुत खुले स्थान पर हैं। इन्हें बारादरी के नाम से जाना जाता है और इसी समय इनको सदर दवाखाना/ डिस्पेंसरी में परिवर्तित कर दिया गया।

भवन काफी विशाल है, लेकिन उसकी कोई जानकारी नहीं है अतः कुछ भी नहीं लिखा जा सकता है। इसके साथ अन्य गौण मकान भी हैं जिन पर शासन और प्रबन्ध विभाग के अधिकारी ने, जो जिले से सम्बन्धित थे, ने कब्जा कर लिया। इसके उत्तर पूर्व में नवाब का पुराना तोशाखाना था। एक विशाल कमरा जो राजा महाराजाओं के वस्त्र आभूषणों का भन्डारगृह होता था, को तोशाखाना कहते हैं। तोशाखाना को म्युनिसिपल बोर्ड / नगर पालिका मन्डल द्वारा नियोजित अधिग्रहित कर लिया गया और चुन्गी कार्यालय की तरह उपयोग में लाने लगे।

(लेखक पुलिस लाइन से 1 किलोमीटर दूर कालू कुआं की तरफ और रेलवे स्टेशन से चिल्ला की तरफ जाने वाली सड़क के कटाव पर वर्तमान में एक पुलिस चौकी है। इस पुलिस चौकी के ठीक सामने कालू कुआं की सड़क को पार कर एक उजाड़ चुंगी चौकी है 2021)

निम्नी नाले के आगे और उसके पास एक जमीन पर अजयगढ़ राज्य का कब्जा है।(1900 ईस्वी) जहां पर अच्छी तरह से बनाए गए किले, महल के ध्वंसावशेष आज भी फैले हुए हैं। महल के आसपास मन्दिर, राज्य अधिकारियों की हवेली, मन्दिर, मकान और अन्य भवन जो राजाओं के अधिकारियों की आवश्यकता के थे, उनके अवशेष आज भी फैले हुए है। इन भवनों को, विद्रोह के दौरान, नवाब के द्वारा नष्ट और ध्वन्स कर दिए गए थे।

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

इसी स्थान पर राजा गुमान सिन्ह की भी समाधि है।(मौसोलियम) यह समाधि एक सामान्य समतल सन्रचना है, जो देखभाल ना होने के कारण नष्ट हो रही है। 1908ई0 में यह स्थान मजबूती से मजबूत दीवार के द्वारा चहारदीवारी के द्वारा सुरक्षित कर दी गई थी और अब यह भविष्य में नष्ट होने से बचाएगा।

इसमें अजय गढ़ के राजाओं ने एक बगीचे को तैयार किया और अब यह भविष्य में नष्ट होने से बचाएगा।

हिंदू मन्दिरों में सबसे पुराने व पवित्र मन्दिर दो ही हैं

1. बामेश्वरी देवी
2. बामेश्वर महादेव

बामेश्वरी व बामेश्वर महादेव के मन्दिर, पहाड़ के विपरीत दिशा में दक्षिण पश्चिम में स्थित है। दोनों पूजा स्थल पहाड़ के ढलान पर स्थित हैं, जहां पर सीढ़ियों से चढ़कर पहुंचा जा सकता है। सीढ़ियों के दोनों तरफ छोटे–छोटे मन्दिर व पुजारियों के घर बने हुए हैं।(1900 ईस्वी) मन्दिरों का स्थापत्य कला बहुत अच्छा है और कुछ हिस्से तो प्राचीन कालीन लगते हैं। पहाड़ के बहुत बड़े पत्थर को लिंग के आकार में तराशा गया है जो कि ऋषि बामदेव की परंपरा के अनुसार बनाया गया है और बान्दा का नाम सम्भवतः इसी से उत्पन्न हुआ है।

बान्दा नगर पालिका परिषद है। 5लाख की आबादी होने पर नगर निगम का दर्जा मिल सकता है।
2011 का जनगणना के अनुसार शहर का जनसन्ख्या एक लाख सत्तर हजार है।

बाग नजरबाग

जुल्फिकार अली बहादुर को बागों का बहुत शौक था। मेहमानों की सराय से मिले हुए पूर्वी भाग में एक बहुत बड़ा बाग बनवाया था। चूकि यह बारादरी और महलों के सामने था इसलिए इसका नाम नजरबाग रखा गया। इस बाग के दक्षिण दिशा में इलाहाबाद से अमरूद के पौधे मान्गकर बिहीबाग /अमरूद का बाग तैयार कराया गया, जहां वर्तमान में मकान बन चुके हैं। इसी नजर बाग के बीच में एक ऊंची कुर्सी देकर नजर बाग कोठी बनवाई गई। ड्राइन्ग रूम के सामने घोड़ा गाड़ी, टमटम बग्घी के लिए दक्षिण में पोर्च बनवाया। गर्मियों में शाम के समय और जाड़ों में सुबह के समय, नवाब ऊपर बनी हुई जगह पर कुर्सियों पर बैठ कर ठन्डी हवा लिया करते थे। कोठी के चारों तरफ साल, सागवान, खिन्नी, शहतूत फलदार वृक्ष, फूलों के पेड़ व अन्य तरह के पौधे लगाए गए। कोठी के उत्तर दिशा में 30–40 फुट की दूरी पर एक कुआं बना हुआ है, जिससे सिन्चाई के अलावा निस्तार का पानी भी लिया जाता था। कोठी के दरवाजे, खिड़कियां, छतों की धन्निया सब साल सागवान की बनी हुई थी, जिस पर बढ़िया कारीगरी की गई थी। 1857 के स्वतंत्रता सन्ग्राम के बाद नवाब साहब की कुल सम्पत्ति, अन्ग्रेज की कब्जे में आ गई। नवाब साहब की कुल सम्पत्ति, नजर बाग कोठी, 1905 में इस कोठी को नीलाम कर दिया गया जिसे सेठ हरिकृष्ण के पूर्वजों में ₹7000 देकर खरीद लिया और अपना घर बना लिया। हरि कृष्ण के वारिसान ने बाग खत्म कर के पश्चिमी भाग में अपनी दुकान बनवाकर बाजार का रूप दे दिया जिस पर वर्तमान 2020 में वी मार्ट मॉल की बहुत बड़ी इमारत बनी है कहते हैं कि नजर बाग कोठी और अन्य दूसरे महल एक दूसरे से सुरन्ग से जुड़े हुए थे।

नजरबाग

200 साल पहले अन्ग्रेजी हुकूमत के दौर में शहर के मध्य भाग में नजरबाग आबाद हुआ। वर्तमान मोहल्ला नजर बाग अपेक्षा का बोझ ढो रहा है। टैक्स के रूप में लाखों रुपए की आमदनी सरकार को मिलती है लेकिन सहूलियतों के नाम पर सब कुछ जीरो है। पुराना शहर होने के कारण अतिक्रमण उजड़ी सड़के और सामान्य सुविधाओं का अभाव यहां देखा जा सकता है। लगभग ₹50 लाख रुपए का टैक्स सरकारी खजाने में जाता है।

नजर बाग में, नजर बाग को देख
नजर पड़ी जब नजर के ऊपर
नजर से(को) गिरते, नजर से, नजर को दिखा
अपने नजरे संभाल के रख

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

नजर जरा संभल के देख
नजर जब इधर करेगा
तो देखभाल की नजर देख कर देख
नजर को नजर से देखो
नजर ना लगे नजर को नजर की
बुरी नजर लगी नजर की
भूल गए नजर को नजर में रहने वालें
कसूर तुम्हारा है, आबादी नजर की है
सुधरे नजर से सवरें नजर
नजर– आंख, नजरबाग, निगाह, शर्म आदि

बाग

जुल्फिकार अली बहादुर को बागों का बहुत शौक था। उनके द्वारा कई बाग बनवाए गए जैसे
ऐशबाग,
गुलाब बाग
पोडा बाग
बेरी बाग आदि

ऐशबाग, उसके सामने गुलाब बाग है। कहा जाता है कि इस खास बाग में गाजीपुर से बैलगाड़ियों में छकडों में भरवा कर मिट्टी मन्गवाई गई और फिर उसमें गुलाब की विशेष कलमें लगाई गई। इसी तरह सहारनपुर से गन्ने मन्गावाकर उनकी खेती की गई, जिससे पोडा बाग के नाम से जाना गया। गन्ने के छोटे टुकड़ों को पोडा कहा जाता है। उसी के पास शाहजहांपुर और बरेली से बेरी के पेड़ मन्गवा कर लगवाए गए थे जिसे बेरी बाग के नाम से जाना जाता है।

मेहमान सराय

नवाब साहब ने आबादी के बीचों बीच, नजर बाग से मिली एक विशाल शानदार मेहमान सराय बनवाई। इसके अन्दर बड़े–बड़े कमरे हुए दालान बने हुए थे। बुलंद दरवाजा उसकी विशालता की गवाही देता है। इसके फाटक पर एक पत्थर पर सन 1242 हिजरी खुदा हुआ है, जो कि इसके बनने का वर्ष बताती है। इस सराय के अन्दर कुआं और मस्जिद बनी है। पानी के निकास के लिए जमीन के भीतर, ढका हुआ, ढलान वाला नाला बनवाया। 1857 ई में यह सारी सम्पत्ति जब्त करके, नगर पालिका के कब्जे में दे दी गई और नगर पालिका बान्दा ने उसके लंबे चौड़े भीतरी भाग में दुकान बनवाकर एक बाजार की शक्ल दे दी।

नवाब अली बहादुर 1822ई से 1849ई तक 27 साल बान्दा में नवाब बान्दा की तरह रहे। उन्होंने लश्कर, मेवाती नाका, हाथी खाना, सुतर खाना जहां बढ़ई ही रहते हैं, नवाब साहब की छावनी, आज भी मौजूद हैं। 27 साल नवाबी करके 50 वर्ष की उम्र में सन 1849 ईस्वी में उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने अपने एक इकलौते पुत्र नवाब अली बहादुर द्वितीय को अपना वारिस और उत्तराधिकारी छोड़ा। नवाब को उनके पूर्वजों के कब्रिस्तान, जो ईमामबाडा के नाम से मशहूर हैं, में दफनाया गया।

बेगम कन्कर महल

नवाब अली बहादुर की तीन पत्नियां थी। मुबारक महल पहली बेगम थी। दूसरी बेगम इफितखार महल थी। इस बेगम के लिए नवाब ने बान्दा के केन के पत्थरों से सुन्दर महल बनवाया। इन पत्थरों के कारण यह महल ''बेगम कन्कर महल'' के नाम से मशहूर हुआ। इसी कन्कर महल में नया अस्पताल बनने से पहले जनाना अस्पताल था। इसके खण्डहर और निशान आज भी बाकी है।

बारादरी

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

नवाब अली बहादुर प्रथम में पेशवा पुणे से अपने जीते हुए भूभाग बुन्देलखण्ड की नवाबी के पूरे अधिकार में प्राप्त कर लिया खास तौर से बान्दा को, तब उसने बान्दा को अपने रहने और राजधानी बनाया था। इसके लिए उसने एक महल बनवाया जो वर्तमान में 2020 में अवस्था में है और यह बारादरी 12 दरवाजे वाला के नाम से मौजूद है –बारादरी

जब नवाब अली बहादुर ने पूरे बुन्देलखण्ड को अपने अधीन कर लिया था तो उन्होंने पुणे के पेशवा से अपेक्षित प्राधिकरण के बाद खुद को बान्दा में स्थापित किया और बान्दा को राजधानी बनाकर नवाब ने बारादरी के नाम से एक महल का निर्माण कराया जो की देशान्तर– अक्षान्श 25028 डिग्री 06मिनट उत्तर और 80020 डिग्री 12 मिनट पर पूर्व पर बनी है इसके ऊपरी स्तर पर पूर्वी हिस्से में 12 दरवाजे थे। ऊपर की मन्जिल तक जाने के लिए उत्तर दिशा में सीढ़ीयां थी। ऊपरी स्तर पर एक लंबा गलियारा जिसके मेहराबदार दरवाजे हैं। जिसके कारण महल को बारादरी कहा जाता है। दक्षिण पश्चिम में गोल मीनार है। इसके शीर्ष पर नवाब अली बहादुर का झण्डा फहराया जाता था। जमीन पर /भूतल पर बारादरी में एक विशाल गलियारा रहा था। इसके आगे दरबार हॉल जहां अलीबहादुर दरबार करते थे। गलियों से जुड़े कई बड़े–बड़े कमरे थे। सीढ़ी जो ऊपर की ओर जाती हैं, पूर्व पश्चिम से घिरी हुई थी और दक्षिण में बड़े–बड़े कमरे थे। अली बहादुर ने बारादरी को खूबसूरत और मजबूत बनवाया था जिसमें साल और सागवान की लकड़ी का इस्तेमाल किया गया था। सभी दरवाजे और खिड़कियां साल की थी सभी पर नक्काशी और अलंकार किए गए थे। 1857 की स्वतंत्रता के बाद, बान्दा के नवाब को हटा दिया गया तथा अन्ग्रेजों ने इस महल को वर्तमान नगर पालिका के भवन के रूप में सन्रक्षित कर दिया। अन्य उपयोगी और उपेक्षा के कारण बारादरी का अधिकान्श भाग झुक गया या नष्ट हो गया है, फिर भी जो बचा हुआ है वह निर्माण की गुणवत्ता को प्रदर्शित करता है। बारादरी की सन्रचना, उत्तर दक्षिण अक्ष पर सन्रेखित, एक आयताकार योजना पर बनाई गई है। यह दो मन्जिला इमारत है। पहले मन्जिल में वर्गाकार और आयताकार कमरे हैं, सभी आपस में जुड़े हुए हैं। उत्तरी दिशा में एक बगीचा था जिस पर किसी के द्वारा कब्जा कर लिया गया है।

निचली मन्जिल की सन्रचना ईटों और चूने के कार्य से बनी है। आन्तरिक और निचली मन्जिल की बाहरी सत्यापन चूने के कार्य का लेप किया गया है। जहां पर दूसरी मन्जिल है कमरे उत्तर पूर्वी व आन्गन के चारों ओर यू आकार में उन्मुख है, जो दक्षिण पश्चिमी है निचली और दूसरे मन्जिल के पश्चिमी हिस्सा नष्ट हो गया है। मुखौटा सन्रचना पूर्वी हिस्से में मौजूद है। धनुषाकार रास्ते का सामने का भाग बलुआ पत्थर से बनाया गया है। 18वीं सदी के अन्त और 19वीं सदी के शुरुआत में बहुकोणिय मेहराब होते थे। समय के साथ छत गिर गई है। उत्तर पूर्व कोने में एक सीढ़ी कई चरणों से मिलाकर बनी हुई है। पास में एक अष्टकोणीय मीनार है जो टावर की छत तक पहुंचने के लिए, सर्पिल आकार में सीढ़ी निर्मित है। यह दावा किया जा सकता है कि बारादरी की कल्पना एक आवासीय महल या हवेली के रूप में की गई है। बारादरी के निर्माण में पहले सन 1790 ईस्वी में भूरागढ़ के किले को जीत कर तथा उसके मरम्मत करा कर अलीबहादुर प्रथम वहीं रहने लगे और जब बारादरी महल एवम् हमाम घर बन गए तो अपने परिवार को पुणे से बुलाकर बारादरी महल में रहने लगे।

हमामघर

देशान्तर 25025 डिग्री 08 मिनट उत्तर तथा अक्षान्श 80020 डिग्री 14 मिनट पूर्व में है। 5 फीट ऊंचे मन्च पर परिवार के स्नान घर का निर्माण किया था, जिसमें तीन कमरे हैं एक छोटा कमरा, एक मध्यम आकार का तथा एक बड़ा कमरा, जो कटोरा के आकार का कमरा था, जहां नवाब कपड़े पहनते थे। इसके ऊपर खुला हुआ गुंबद था। कटोरा आकार के कमरे का उपयोग नहाने के लिए किया जाता था।

इससे 10–15 फीट की दूरी पर एक कुआ था, जिसका जल चैनल के माध्यम से स्नानघर तक भेजा जाता था और उपयोग किया जाता था। उपयोगित पानी, एक नाली के माध्यम से बहता हुआ दक्षिणी ढलान की तरफ चला जाता था। दक्षिणी ढलान जहां बारादरी महल की रक्षा के लिए एक खाई खोदी गई थी। स्नान घर में प्रवेश करने के लिए एक दरवाजा था और वह दरवाजा आज भी खड़ा हुआ है। इसका उपयोग महिलाओं द्वारा किया जाता था। पश्चिम दरवाजा पुरुषों के लिए था और वहां अभी भी पत्थर पट्टिका मौजूद है जिसे अली बहादुर द्वारा स्थापित किया गया था। उत्तर में कटोरा के आकार का कमरा बना हुआ था और समतल बनाया गया था। अच्छी तरह निर्मित, अभी भी अपने मूल स्थिति में मौजूद है।

यहां कुयें में अब एक मोटर जोड़ी गई है, जिससे शहर के कुछ हिस्सों में पानी की पूर्ति होती है।

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बारादरी के उत्तरी किनारे पर हम्माम की सन्रचना मौजूद है। हमाम में भी तीन मुख्य कक्ष हैं– नम्बर एक सर्दखाना/ठन्डा कमरा, नम्बर दो गर्मखाना/गर्म कमरा और नम्बर तीन कपड़े बदलने वाला कमरा। तीन कमरों के अलावा मुख्य कक्ष, एक शौचालय, और सेवादार कक्ष, गलियारे मौजूद हैं। उत्तर की ओर एक अपनी भन्डारण टैंक की सुविधा प्रदान की गई है। वर्तमान में कमरे मौजूद नहीं है।

आजादी के बाद यह हम्माम घर नगर पालिका के कार्यवाहक ऑफिसर के रहने के लिए बना दिया गया था जिसमें 50–60 साल तक जगदीश्वर नाथ श्रीवास्तव उर्फ जग्गू बाबू रहे। हमाम घर में आज भी एक अपठनीय अरबी शिलालेख का पत्थर लगा है।

मस्जिद इमामबाड़ा

शाही कब्रिस्तान के नाम से भी प्रसिद्ध है अर्थात् जनाजे की नमाज के लिए मस्जिद व कब्रिस्तान या इमामबाडा। लगता है कि जितने भी कब्रिस्तान है वह इमामबाड़े ही हुआ करते थे। नवाब अली बहादुर प्रथम ने बान्दा को अपनी राजधानी बनाकर रहने के लिए बारादरी महल बनवाया था और पूरे महल के साथ पूरे परिवार के साथ यहां निवास करते थे परिवार में रिश्तेदारों की मौत हो जाने पर अली बहादुर ने कालवन गन्ज मोहल्ले के पास पुरानी आबादी खुटला मोहल्ले में शाही कब्रिस्तान के लिए जगह निश्चित की और एक मस्जिद इमामबाड़े की की शक्ल में 40 फीट लंबी और 30 फुट चौड़ी इमारत बनवाई ताकि यहां जनाजे की नमाज पढ़ी जा सके, आज भी कालबन गन्ज में मौजूद है। इस कब्रिस्तान में अली बहादुर प्रथम, शमशेर बहादुर सानी, नवाब जुल्फिकार अली बहादुर, राबिया बेगम, और सारे परिवार के लोगों की मजार, सन्गमरमर की बनी हुई है। बान्दा की पुरानी आबादी खुटला थी। खुटला और बारादरी के बीच कोई आबादी नहीं थी, इसलिए नवाब अली बहादुर ने खुटला की आबादी के समीप, जानबूझ कर हिन्दू आबादी के पास यह शाही कब्रिस्तान बनवाया। इसके बहुत बड़े भाग में बाग लगवाए थे। नवाब अली बहादुर की मृत्यु के बाद उनकी कब्र इसी कब्रिस्तान में 1802 ई में बनी

इमामबाड़ा–   रामा का इमामबाड़ा, भाऊराम तय्या का इमामबाड़ा

पूरे भारत में शायद बान्दा एक ऐसा इकलौता जिला है, जहां मुहर्रम की शुरुआत ही एक ब्राह्मण परिवार ने की थी।

बान्दा में 275 (वर्तमान 2025ईस्वी में) साल पहले मोहर्रम की शुरुआत पुणे से आये एक मराठा परिवार ने की थी। इमामबाड़ों में बान्दा का सबसे ऐतिहासिक और पुराना रामा का इमामबाड़ा है। इमामबाड़े की स्थापना 1750 ईस्वी में पुणे से आये मराठा ब्राह्मण रामा राव ने की थी। यह इमामबाड़ा बान्दा का पहला इमामबाड़ा था। बान्दा में पहली बार इमाम हुसैन की याद में ढाल उठाई गई थी। जनश्रुति के अनुसार, तब से लेकर आज तक रामा के वंशज मुहर्रम के 10 दिन नन्गे पैर रहकर, जमीन में सोकर और व्रत रखकर इस परंपरा को निभाते चले आ रहे हैं। निवास कहां है, पता नहीं चला।

1765 ईस्वी में इसी परिवार की महिला लक्ष्मी और उनके परिजन भाऊराम ने एक दूसरा इमामबाड़ा स्थापित किया जो भाऊराम तय्या का इमामबाड़ा के नाम से जाना जाता है। 70प्रतिशत हिन्दू हुसैन की आस्था में सराबोर होकर ढाल निकालते हैं। आग के अलाव में कूदकर अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करते हैं।

अन्य

पर्यटन हेतु जन्गल, मडफा पहाड पर शिव 600 सीढ़ी, भरत कूप के पास व अन्य।
किलेदार का पुरवा 12 किमी दूर बान्दा से
चौधरी पुरवा, कहला, पल्हरी
शेखसरवर खिन्नी– निम्नी पार के पास प्रागी
सजर शैल चित्र

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण **Mohalle of Banda**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार–

रामा का इमाम बाड़ा त्मिइदकंपिेज जलवींत उनेस `मम पद2ण्09

सन्दर्भ दैनिक भास्कर 28जुलाइ 2023

ीजजचेरूध्ध्ूण्ड्डीांतण्बवउध्सवबंसध्नजजंत.चतंकमेीध्इंदकंध्दमूेध्मितम.उंतंजीं.इतीउपद.तंउ.तंवे.जंतजमक.जीम.मिजपअंस.वि उनींततंउ.131609766णीजउस

फाइल **BANDA HIST VIL DETAIL (1)**

ीजजचेरूध्ध्ूण्वदमपिअमदपदमण्बवउध्पदकपंध्अपससंहमेध्ठंदकंध्ठंदकंध्इंजतं.ठंदकं
ंसस कमजंपसे व िउंदकपत उेरपक बीनतबी इंत`बीववस मजब
ठंदकं ीपेज पदकमग इववा बपजल

1 अनाथालय **banda history from nic**
2 ैवनतबमरू न्ब् ↑ – ळतंदजीसंलं (ीजजचेरूध्ध्मह4.दपब.पद / न्च्स्पइतंतपमे / व्ब्|ब्) द्य
3 इदकं ीपेज ।नं जंसंइ दंउम रंसअंलन ूजमत कंजं कमेजनबजपवद
4 कंजं बंद इम जांमद तिवद ।नह 25 छमू तमूंतक व िक्ड ंदक वजीमत तमूंतक
5 पेज 212 ऑब्लिक 216

आल्हा चौक का अम्बेडकर पार्क कहां पर

बान्दा के मोहल्ले व नामकरण Mohalle of Banda